ग्रन्थमाला ‘बालसंस्कार’ : खण्ड ७

टीवी, मोबाइल एवं इंटरनेट के दुष्परिणामोंसे बच्चोंको बचाएं !

भूमिका

‘सनातनकी ‘बालसंस्कार’ ग्रन्थमालाका ग्रन्थ ‘टीवी, मोबाइल और इंटरनेट से होनेवाली हानिसे बचें और लाभ उठाएं !’ बच्चोंकी भांति अभिभावकों और शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है । ऐसेमें ‘अलगसे यह लघुग्रन्थ क्यों प्रकाशित किया गया ?’ यह प्रश्न कुछ लोगोंके मनमें उठ सकता है । प्रस्तुत लघुग्रन्थ प्रकाशित करनेके उद्देश्य निम्नांकित हैं ।

१. हिन्दू संस्कृतिकी शिक्षा है कि ‘अभिभावक और शिक्षक, बच्चोंके प्रथम गुरु हैं ।’ जीजामाता और दादोजी कोंडदेव ने बालक शिवाजीपर बचपनमें अच्छे संस्कार किए थे; इसलिए वे केवल पन्द्रह वर्षकी आयुमें ‘एक स्त्रीपर बलात्कारके अपराधमें रांझा गांवके मुखियाको हाथ-पैर काटनेका दण्ड दे सके ।’ आगे चलकर इन्हीं शिवाजीने रामराज्यसमान आदर्श ‘हिन्दवी स्वराज्य’की स्थापना की थी । इस ग्रन्थका मुख्य उद्देश्य यही है कि आजके अभिभावकों और शिक्षकों को

भी प्रकर्षकतासे लगे कि 'भावी पीढीको चरित्रवान, राष्ट्रभक्त और धर्मप्रेमी बनाना', हमारा नैतिक और राष्ट्रीय दायित्व है ।'

२. बच्चे अनुकरणप्रिय होते हैं । उन्हें संस्कारोंका केवल उपदेश करनेसे काम नहीं बनता; अपितु इसके लिए अभिभावकोंका संस्कारयुक्त आचरण भी आवश्यक है । अभिभावकोंके आचरणसे बच्चोंपर अनायास ही संस्कार होते हैं । इस दृष्टिसे 'अभिभावकोंका आचरण कैसा हो और कैसा न हो', यह इस लघुग्रन्थमें बताया गया है ।

३. आजकल दूरदर्शन, मोबाइल और इंटरनेट जैसे प्रसारमाध्यमोंका झुकाव रज-तम प्रधान, असंस्कृत, विकृत, अश्लील संवाद और दृश्य की ओर है । इससे हिन्दू धर्म और संस्कृति की व्यापक हानि हो रही है । हिन्दू समाजको धार्मिक शिक्षा नहीं मिल रही है, इसलिए भावी पीढी भोगविलासमें इतनी अधिक डूब चुकी है कि वह अपना धर्म ही भूल गई है । धर्म राष्ट्रकी नींव है । धर्म ही डूब गया, तो राष्ट्र नष्ट होनेमें समय नहीं

लगेगा । इसीलिए 'दूरदर्शन, मोबाइल और इंटरनेट उपयोग धर्मकी शिक्षा देनेके लिए कैसे किया जा सकता है' इसकी जानकारी भी इस लघुग्रन्थमें दी गई है । इसका अध्ययन कर, 'भारतकी आध्यात्मिक परम्पराकी रक्षा करना', अभिभावकों और शिक्षकों का धार्मिक कर्तव्य ही है ।

४. बच्चोंके मनपर कुसंस्कार करनेवाले तथा राष्ट्र एवं धर्म की हानि करनेवाले कार्यक्रम प्रसारित करनेवाली दूरदर्शन वाहिनियोंका प्रबोधन करना, इससे लाभ न होनेपर दूरदर्शन वाहिनियोंका बहिष्कार करना, इस प्रकारके प्रयत्न करना, अभिभावकों और शिक्षकों का धार्मिक कर्तव्य ही है । इस विषयमें भी इस लघुग्रन्थमें मार्गदर्शन किया गया है ।

५. समाज जब ईश्वरप्राप्तिके प्रयत्न अर्थात 'साधना' करता है, तभी वह सात्त्विक बनता है । एक बार व्यक्ति सात्त्विक हो जानेपर, वह साधनासे मिलनेवाले आनन्दके कारण रज-तमात्मक बातोंमें पुनः नहीं फंसता । इसके लिए अभिभावकों

और शिक्षकों को भी साधना करनी चाहिए । अभिभावक और शिक्षक, ‘बच्चोंमें साधना करनेके प्रति रुचि क्यों उत्पन्न करें’, यह भी इस लघुग्रन्थमें दिया गया है ।

अभिभावक और शिक्षक केवल यही लघुग्रन्थ पढेंगे, तो उन्हें जानकारी अधूरी लग सकती है; क्योंकि ‘टीवी, मोबाइल और इंटरनेट की हानि से बचकर लाभ उठाएं !’ इस मूल ग्रन्थके सूत्र इस लघुग्रन्थमें नहीं लिए हैं । अतः पूरी जानकारीके हेतु अभिभावक और शिक्षक मूल ग्रन्थ और यह लघुग्रन्थ, दोनों पढें ।

‘यह लघुग्रन्थ पढकर अभिभावक और शिक्षक बच्चोंके प्रति अपना दायित्व एवं कर्तव्य पहचानें तथा भावी पीढीको सब प्रकारसे आदर्श बनानेका प्रयत्न करें’, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !’ – **संकलनकर्ता**

‘धार्मिक कृत्य’ ग्रन्थमालाका एक लघुग्रन्थ

आरती उतारनेकी शास्त्रोक्त पद्धति

अनुक्रमणिका

१. आधुनिक प्रसारमाध्यमोंके कारण वर्तमानमें हुई चिन्ताजनक पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुर्दशा १३

२. अभिभावकों और शिक्षकों में देशकी भावी पीढीका निर्माण करनेकी क्षमता है ! १५

३. अभिभावकवर्गका दायित्व १५

४. शिक्षकबन्धुओंका दायित्व ४५

परिपूर्ण अध्यात्मशास्त्र सिखानेवाला

www.Sanatan.org

- धार्मिक कृत्योंका शास्त्र
- साधनासम्बन्धी शंकासमाधान

प्रतिमास २ लाख पाठकसंख्यावाला जालस्थल !

हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड, गुजराती व तमिल, इन ६ भाषामें !